

पावन कर्मों का महापर्व माघीपूर्णिमा

डॉ० धनंजय कुमार मिश्र
विभागाध्यक्ष – संस्कृत विभाग
संताल परगना महाविद्यालय, दुमका
सिदो-कान्हू मुर्मू विश्वविद्यालय, दुमका (झारखण्ड)

भारतवर्ष विविधताओं और विभिन्नताओं का देश है। विविध परम्परा और सुसंस्कृत संस्कृति भारतवर्ष की पहचान है। प्राचीन आर्ष ग्रन्थ वर्तमान का मार्गदर्शन और भविष्य का निर्धारण करने में महती भूमिका का निर्वहण करते हैं। इन आर्ष ग्रन्थों में वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत और पुराण अतीत से आज तक हमारे जीवन पथ को आलोकित कर रहे हैं। इन ग्रन्थ-रत्नों में कर्मों की प्रधानता के द्वारा जीवन जीने की प्रेरणा दी गई है। हमारे कर्म सात्विक, शुद्ध और सुन्दर हों जिससे समाज का कल्याण और मानवता का उत्थान होता रहे। प्रकृति और पर्यावरण के बिना मानव समाज का अस्तित्व ही नहीं अतएव उनके संरक्षण का सूक्ष्म संदेश भी आर्षग्रन्थों में निहित है। किसी ने ठीक ही कहा है “समाजस्य हितम् शास्त्रेषु निहितम्” – अर्थात् समाज का हित शास्त्रों में निहित है। शास्त्र हमारे ज्ञानचक्षु का उन्मीलन कर गुरु की भाँति हितैषी हैं।

भारतीय ष्वास्त्रों में माघ मास को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है। भारतीय संवत्सर का ग्यारहवाँ चन्द्रमास और दसवाँ सौरमास माघ कहलाता है। मघा नक्षत्र से युक्त हाने के कारण इस महीने का नाम माघ पड़ा। ऐसी मान्यता है कि इस महीने में शीतल जल में डुबकी लगाने वाले पापमुक्त होकर अपना इहलोक और परलोक सुधारते हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि माघी पूर्णिमा पर स्वयं संसार के पालक भगवान विष्णु गंगाजल में निवास करते हैं। इस लिए इस पावन समय में गंगाजल का स्पर्शमात्र भी अनन्त पुण्य प्रदान करने वाला है। इस संदर्भ में यह भी कहा जाता है कि इस पावन तिथि में नारायण क्षीर सागर में विराजते हैं तथा गंगा क्षीर सागर का ही रूप है।

भारतवर्ष में प्रतिवर्ष पौष पूर्णिमा से माघी पूर्णिमा तक हजारों भक्त गंगा-यमुना के पावन संगम तट पर प्रयाग में कल्पवास करते हैं। इसके अतिरिक्त अनेक पवित्र नदियों के किनारे भी श्रद्धालु जन पूर्ण आस्था और विश्वास के साथ प्रयाग के संगम का स्मरण करते हुए कल्पवास करते हैं। इस कल्पवास में महीने भर नदी के किनारे झोपड़ी बनाकर निवास करते हैं। न्यूनतम आवश्यकता से जीवन निर्वाह करते हुए प्रकृति की गोद में नदी के किनारे शीतलता, पवित्रता और सात्विकता का साक्षात्कार करते हैं। प्रयाग में प्रतिवर्ष माघ मेला लगता है। हजारों भक्त शास्त्रानुकूल आचरण करते हैं। शास्त्रों में माघ स्नान एवं व्रत की बड़ी महिमा

बताई गई है। माघ की प्रत्येक तिथि पुण्य पर्व है। माघ शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा जिसे लोक भाषा में माघी पूर्णिमा भी कहते हैं बहुत ही पुण्यदायिनी कही गई है। शास्त्रीय मान्यताओं के अनुसार इस दिन सूर्योदय से पूर्व जल में भगवान का तेज मौजूद रहता है, देवताओं का यह तेज पाप का शमन करने वाला होता है। इस दिन सूर्योदय से पूर्व जब आकाश में पवित्र तारों का समूह उदित हो अर्थात् तारे दिखाई देते रहें, चाँदनी बिखरी हुई हो उस समय नदी में स्नान करने से घोर पाप भी धुल जाते हैं। तारों के अस्त होने के बाद किया गया स्नान मध्यम फलदायी है जबकि सूर्योदय के बाद किये गये स्नान से भक्त उत्तम फल से वंचित रह जाता है। कार्तिक पूर्णिमा की तरह ही माघी पूर्णिमा भी सनातन धर्म में महत्त्वपूर्ण है। शास्त्रों में यहाँ तक कहा गया है कि मन ही मन प्रयाग का ध्यान करते हुए घर में स्नान करने से सौ गुणा फल नदी, तालाब या अन्य जलाशयों में स्नान से इस दिन होता है। हजार गुणा फल गंगा में स्नान से होता है और प्रयाग में गंगा-यमुना के संगम पर किया गया स्नान लाख गुणा फल प्रदायी है।

संगम स्थल पर एक मास तक कल्पवास करने वाले तीर्थयात्रियों के लिए माघी पूर्णिमा एक विशेष पर्व है। माघी पूर्णिमा को एक मास का कल्पवास पूर्ण हो जाता है। प्रयागराज में इस पुण्य तिथि को सभी कल्पवासी गृहस्थ प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में गंगा स्नान कर माँ गंगा की आरती एवं पूजा करते हैं तथा अपनी – अपनी कुटियों में आकर हवन करते हैं, फिर साधु-संन्यासियों तथा विप्रों एवं भिक्षुओं को भोजन कराकर स्वयं भोजन करते हैं और कल्पवास में रखी गई खाने-पीने की वस्तुएँ जो कुछ बची रहती हैं, उन्हें दान कर देते हैं। गंगा जी की रेणु, कुछ प्रसाद, रोली एवं रक्षासूत्र तथा गंगाजल लेकर पुनः माँ गंगा के दरबार में उपस्थित होने की प्रार्थना कर अपने-अपने गृहों को लौट आते हैं।

माघी पूर्णिमा के दिन कई धार्मिक कर्म सम्पन्न करने की भी विधि शास्त्रों में दी गई है। प्रातः काल नित्यकर्म एवं स्नानादि से निवृत्त होकर भगवान विष्णु का विधिपूर्वक पूजन करने का विधान है। तदनन्तर पितरों का श्राद्ध करना चाहिए। असमर्थों को भोजन, वस्त्र तथा धन देना चाहिए। तिल, कम्बल, गुड़, कपास, घी, मिठाई, फल, अन्न, द्रव्य, चरण-पादुकाएँ आदि का दान करके पूरे दिन का व्रत रखकर विप्रों, तपस्वियों को भोजन कराना चाहिए और सत्संग एवं कथा-कीर्तन में दिन-रात बिताकर अगले दिन व्रत का पार्वण करना चाहिए।

यद्यपि प्रत्येक महीने की पूर्णिमा को सनातन धर्मावलम्बी श्रद्धालुजन सत्यनारायण भगवान का व्रत रखकर सायं काल कथा श्रवण करते हैं लेकिन माघी पूर्णिमा को सत्यनारायणव्रत तथा कथाश्रवण का फल अनन्तगुणा फलदायी कहा गया है।

वाल्मीकि रामायण में सत्य के अलौकिक प्रभाव को दर्शाने वाला एक उदाहरण अनुपम है – जनकनंदिनी सीता जी को बचाने के प्रयास में क्षत-विक्षत एवं मरणासन्न जटायु को देखकर श्रीराम करुणार्द्र होकर जटायु को नये शरीर लेकर प्राणधारण करने को कहते हैं परन्तु जीवन के प्रति जटायु की अरुचि देखकर अन्ततः उसे दिव्यगति के साथ उत्तमलोक प्रदान करते हैं।

“या गतिर्यज्ञशीलानामाहिताग्रेश्च या गतिः।
अपरावर्तिनां या च या च भूमिप्रदायिनाम्।
मया त्वं समनुज्ञातो गच्छ लोकाननुत्तमान्।।”

यहाँ यह जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि मोक्ष प्रदान करने का सामर्थ्य विष्णु भगवान में ही है , फिर मनुष्यरूप में विराजमान श्रीराम ने जटायु को मोक्ष किस प्रकार दे दिया ? वस्तुतः इस जिज्ञासा का समाधान मनीषी आचार्य इस प्रकार करते हैं कि श्रीराम में मानवीय गुणों में सत्य सर्वोपरि था और सत्यव्रत का पालन करने वाले व्यक्ति के लिए समस्त लोकों पर विजय पा लेना अत्यन्त सहज हो जाता है। इस लिए श्रीराम ने विष्णु होने के कारण से नहीं अपितु मनुष्य को देवोपम बना देने वाले अपने सत्यरूपी सद्गुण के आधार पर जटायु को मोक्ष प्रदान किया।

सत्येन लोकांजयति द्विजान् दानेन राघवः।
गुरुश्रुषया वीरो धनुषा युधि शास्त्रवान्।।
सत्यं दानं तपस्त्यागो मित्रता शौचमार्जवम्।
विद्या च गुरुश्रुषा ध्रुवाण्येतानि राघवे।।

इस प्रकार सत्य को नारायण मानकर अपने सांसारिक व्यवहारों में उसे सुप्रतिष्ठित करने का व्रत लेने वालों की कथा है – सत्यनारायणव्रतकथा। सत्य को अपनाने के लिए किसी मुहूर्त की भी आवश्यकता नहीं है। कभी भी, किसी भी दिन से यह शुभ कार्य प्रारम्भ किया जा सकता है। “यस्मिन् कस्मिन् दिने मर्त्यो भक्तिश्रद्धासमन्वितः” लेकिन पूर्णिमा, एकादशी और संक्रान्ति विशेष पुण्यकाल होने से सनातन धर्मावलम्बी पुण्यकाल में ही सत्यनारायणव्रत करते हैं। आवश्यकता है केवल व्यक्ति के दृढ़ निश्चय की और उसके परिपालन के लिए सम्पूर्ण समर्पण भाव की। सूत्र है कि मनुष्य ज्यों ही सत्य को अंगीकार कर लेता है उसी पल से सुख एवं समृद्धि की वृष्टि प्रारम्भ होने लगती है। माघीपूर्णिमा मानव समाज को सत्य पर चलने का संदेश प्रदान करने वाली तिथि है।

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार माघ शुक्ल पूर्णिमा को यदि शनि मेष राशि पर, गुरु और चन्द्रमा सिंह राशि पर तथा सूर्य श्रवण नक्षत्र पर हो तो महामाघी पूर्णिमा का योग होता है। यह पुण्यतिथि स्नान-दानादि के लिए अक्षय फलदायिनी है। परम वैष्णव सन्त रविदास (रैदास) जी की जयन्ती भी माघी पूर्णिमा ही है।

स्कंदपुराण के रेवाखण्ड में माघ स्नान की कथा के उल्लेख में आया है कि प्राचीन काल में नर्मदा तट पर शुभव्रत नामक ब्राह्मण निवास करते थे। वे सभी वेद और शास्त्रों के अच्छे ज्ञाता थे परन्तु उनका स्वभाव धन-संग्रह में अधिक था। उन्होंने धन तो बहुत एकत्रित किया। वृद्धावस्था के दौरान उन्हें अनेक रोगों ने घेर लिया। तब उन्हें एहसास हुआ कि पूरा जीवन धन कमाने में लगा दिया तब परम पुरुषार्थ मोक्ष की चिन्ता उन्हें सताने लगी। परलोक

सुधारने के लिए चिन्तातुर शुभव्रत को अचानक एक श्लोक याद आया जिसमें माघ मास के स्नान की विशेषता बतायी गई थी। उन्होंने माघस्नान का संकल्प लिया और “*माघे निमग्नाः सलिले सुशीते विमुक्तपापस्त्रिदिवं प्रयान्ति*” इसी श्लोक के आधार पर नर्मदा में स्नान करने लगे। नौ दिनों तक प्रातः नर्मदा के जल में स्नान किया और दसवें दिन स्नान के बाद उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया। शुभव्रत ने जीवन भर कोई अच्छा कार्य नहीं किया था लेकिन माघ मास में स्नान करके पश्चाताप करने से उनका मन निर्मल हो गया। माघ मास के स्नान करने से उन्हें सद्गति की प्राप्ति हुई। यहाँ माघ स्नान के साथ पश्चाताप रूपी उत्कृष्ट मानवीय मूल्य भी जन सामान्य के लिए उपदिष्ट है। पुराणों के अनुसार पौष मास की पूर्णिमा से माघ मास की पूर्णिमा तक माघ मास में पवित्र नदी नर्मदा, गंगा, यमुना, सरस्वती, कावेरी सहित अन्य जीवनदायिनी नदियों में स्नान करने से मनुष्य को समस्त पापों से छुटकारा मिलता है और परम पुरुषार्थ मोक्ष के मार्ग प्रशस्त होते हैं।

मान्यताओं के अनुसार माघ पूर्णिमा का स्नान अति महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि इस तिथि पर चन्द्रमा अपने पूर्ण यौवन पर होता है। चन्द्रमा की किरणें पूरी लौकिकता के साथ पृथिवी पर पड़ती हैं। स्नान के बाद मानव शरीर पर उन किरणों के पड़ने से शांति की अनुभूति होती है।

माघ मास वैष्णव, शैव और शाक्त सम्प्रदायों में समन्वय की सीख देने वाला मास है। शक्ति की उपासना का पर्व गुप्त नवरात्रि माघ मास में होती है। वर्ष में आदि शक्ति माँ भगवती की उपासना के लिए चार नवरात्रि आती है। इसमें दो गुप्त एवं दो उदय नवरात्रि होती है। चैत्र और आश्विन मास की नवरात्रि उदय नवरात्रि के नाम से जानी जाती है। आषाढ़ और माघ की नवरात्रि गुप्त नवरात्रि के नाम से जानी जाती है। माघ मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक गुप्त नवरात्रि मनायी जाती है। इन नौ दिनों में माँ भगवती के गुप्त स्वरूप काली, तारा, बंगला, षोडशी आदि की अराधना की जाती है। ज्ञान की देवी सरस्वती की अराधना पंचमी तिथि को होती है। वैष्णव विष्णु के बहाने, शैव शिव के बहाने, शाक्त नवरात्रि के बहाने और समदर्शी एक भाव मानकर माघ मास में आराध्य की आराधना करते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टि से भी माघ स्नान महत्वपूर्ण है। माघ में ठंड खत्म होने की ओर रहती है तथा वसंत का आगमन होने लगता है। ऋतु परिवर्तन का स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े इसलिए प्रतिदिन सुबह स्नान करने से शरीर नीरोग रहता है।

विभिन्न पुराणों में माघस्नान के महात्म्य के साथ अनेक मानवीय उत्कृष्टमूल्यों को अपनाने की शिक्षा दी गई है। यथा – सत्य, दान, शुचिता, स्वच्छता, अलोभ, त्याग, पितरों का श्राद्ध-तर्पण, भक्ति, ज्ञान, आस्तिकता, जप, तप, पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, नदी संरक्षण, सद्भाव, पंथसमन्वयता इत्यादि।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि माघ मेला भारतवर्ष में सर्वाधिक प्रिय मेला है। भारत के सभी प्रमुख तीर्थ स्थलों और नदी पटों पर आयोजित मेला और माघस्नान सिर्फ एक धार्मिक कृत्य नहीं है। यह भारतीय जनमानस को जागरूक करने का उत्सव है। जन सामान्य को उत्कृष्ट मानवीय मूल्यों को अपने जीवन में उतारने की शिक्षा प्रदान करने वाली औषधि है। शिक्षित-अशिक्षित सभी वर्गों को जीवन पथ पर सद्वृत्तियों को अपनाकर चलने की प्रेरणा देने वाला पाथेय है।